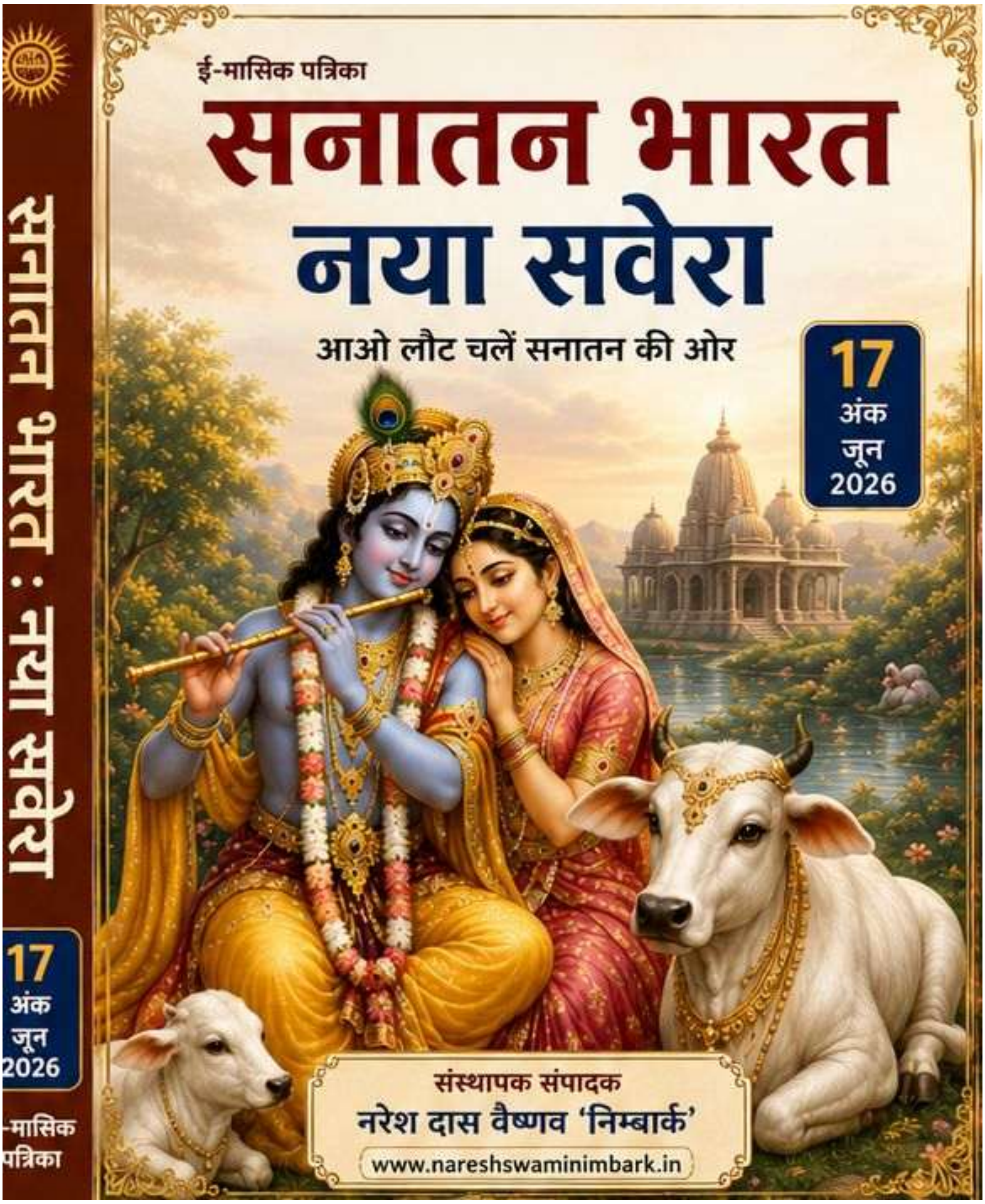

ई-मासिक पत्रिका
सनातन भारत
नया सवेरा
आओ लौट चलें सनातन की ओर
17 अंक जून 2026
संस्थापक संपादक
नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क'
www.nareshswaminimbark.in
सनातन भारत : नया सवेरा
17 अंक जून 2026
-मासिक पत्रिका

🕉 ई-मासिक पत्रिका 🕉

सम्पादकीय — जून 2026 | अंक 17

✦ सनातन — हमारी पहचान, हमारा गौरव ✦

प्रिय सनातन परिवार,

राधे-राधे! 🙏

"सनातन भारत नया सवेरा" के सत्रहवें अंक के साथ पुनः आपके समक्ष उपस्थित होते हुए हृदय में असीम आनन्द का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका केवल शब्दों का संकलन नहीं – यह एक धर्म-यात्रा है, एक सनातनी जागृति का स्वर है।

✦ इस अंक की आत्मा

आज जब हम अपने चारों ओर दृष्टि डालते हैं, तो एक विचित्र वेदना हृदय को व्याकुल करती है। हमारे घरों में पले-बढ़े बच्चे – जो गीता की छाया में जन्मे, राम के नाम से पले – वे



आज अपनी जड़ों से दूर होते जा रहे हैं। पश्चिम की चकाचौंध में वे अपनी सात्विक विरासत को भूलते जा रहे हैं।

परन्तु प्रश्न यह नहीं कि वे क्यों जा रहे हैं –

प्रश्न यह है कि हम उन्हें वापस लाने के लिए क्या कर रहे हैं?

इसी उत्तर की खोज में यह अंक समर्पित है।

✦ सनातनी – श्रेष्ठ क्यों?

हम सनातनी केवल एक धर्म के अनुयायी नहीं – हम एक जीवन-पद्धति के वाहक हैं। हमारे ऋषियों ने जो ज्ञान दिया, वह किसी एक काल का नहीं – वह सनातन है, शाश्वत है। हमारा आचार सात्विक है, हमारा विचार मानवता के कल्याण से ओत-प्रोत है। हम "वसुधैव कुटुम्बकम्" को जीते हैं – केवल बोलते नहीं।

चित्र नरेश दास वैष्णव निंबार्क

महाभारत और रामायण – ये केवल ग्रन्थ नहीं, ये जीवन के दर्पण हैं। इनमें हर युग के प्रश्नों के उत्तर छिपे हैं। इसीलिए इस अंक में हम इन्हीं महाकाव्यों से प्रेरणा लेकर आपके समक्ष अनमोल लेख प्रस्तुत कर रहे हैं।

✦ नया संकल्प

इस सत्रहवें अंक के साथ मैं आप सबके सामने एक संकल्प लेता हूँ – आने वाले प्रत्येक अंक में यह पत्रिका और अधिक समृद्ध, और अधिक प्रभावशाली बनेगी। हम इसे देश-विदेश के प्रत्येक सनातनी तक पहुँचाएंगे।

यह केवल एक पत्रिका नहीं – यह सनातन धर्म का ध्वज है।

“ आओ लौट चलें – सनातन की ओर ”

सादर सनातन वन्दन,

नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क'

संस्थापक सम्पादक

सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी एवं इतिहासकार

विषय-सूची

— इस अंक में संकलित सामग्री —

🙏 **उपसंहार एवं समापन**

संस्थापक सम्पादक: **नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क'**

सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी | सनातन वैष्णव इतिहासकार | www.nareshswaminimbark.in

ॐ रामायण विशेष ॐ

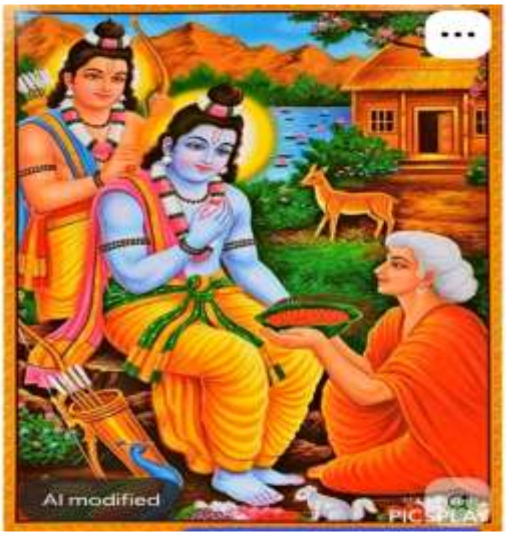
अध्याय —1 शबरी और श्रीराम का दिव्य मिलन

— जब भगवान स्वयं आए एक वृद्ध भीलनी की कुटिया में —

✦ प्रस्तावना — भक्ति की अजेय शक्ति

सनातन धर्म के महाकाव्य 'रामायण' में अनेक प्रसंग ऐसे हैं जो मनुष्य के हृदय को हिला देते हैं, आत्मा को झकझोर देते हैं और जीवन का नया अर्थ प्रकट करते हैं। परन्तु जब बात आती है सबसे भावुक, सबसे प्रेमपूर्ण और सबसे अद्भुत प्रसंग की — तो एक ही नाम हृदय में उभरता है — शबरी और श्रीराम का मिलन।

यह प्रसंग केवल एक वृद्ध भीलनी और एक राजकुमार की भेंट नहीं है। यह प्रसंग है भक्ति और भगवान के बीच का वह चिरन्तन सम्बन्ध, जिसे न जाति छू सकती है, न कुल रोक सकता है, न धन खरीद सकता है। यह वह क्षण है जब सर्वशक्तिमान परमेश्वर स्वयं चल कर आते हैं — अपनी भक्त के द्वार पर।



आज जब हम अपने बच्चों को सनातन धर्म की महिमा से परिचित कराना चाहते हैं, तो शबरी का यह प्रसंग सबसे उत्तम पाठ है। इसमें न कोई जटिल दर्शन है, न कोई कठिन कर्मकाण्ड — केवल सच्चा प्रेम, अटल विश्वास और निष्कपट भक्ति।

✦ शबरी कौन थीं? — एक परिचय

शबरी मतंग ऋषि के आश्रम में रहने वाली एक साधारण भीलनी थीं। समाज की दृष्टि में वे निम्न कुल की थीं, परन्तु उनकी भक्ति की उच्चता किसी राजा या महाराज से कहीं अधिक थी। उनके गुरु मतंग ऋषि ने अपने अन्तिम समय में उन्हें वचन दिया था —

"शबरी! तू निराश मत होना। एक दिन स्वयं श्रीराम यहाँ आएंगे और तेरी भक्ति को स्वीकार करेंगे।"

इस एक वचन पर शबरी ने अपना सम्पूर्ण जीवन न्योछावर कर दिया। गुरु के महाप्रयाण के पश्चात भी वे उसी आश्रम में रहीं, प्रतिदिन वन से फल-फूल लाकर मार्ग को स्वच्छ करतीं, कण्टक हटातीं और राम की बाट जोहतीं।

चित्र : शबरी और श्रीराम का दिव्य मिलन

वर्षों बीत गए। देह वृद्ध हुई, केश श्वेत हो गए, किन्तु भक्ति की लौ कभी मन्द न हुई। यही है सनातन परंपरा का सबसे बड़ा संदेश — सच्ची भक्ति में समय की सीमा नहीं होती।

✦ प्रतीक्षा — जब हर दिन एक तपस्या थी

शबरी की प्रतीक्षा केवल बैठे-बैठे प्रतीक्षा नहीं थी — वह एक जीवन्त साधना थी। प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर वे वन में जातीं, सबसे मीठे बेर चुनतीं, उन्हें चख-चखकर देखतीं कि कहीं कोई कड़वा न हो। फिर उन्हें सुरक्षित रखतीं — राम के लिए।

पथ को स्वच्छ करतीं, कण्टक उठातीं, आश्रम को सजातीं — क्योंकि उन्हें पूर्ण विश्वास था कि आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों — राम आएंगे अवश्य।

यह है सनातन भक्ति का स्वरूप — जहाँ प्रतीक्षा भी पूजा बन जाती है।

आज की पीढ़ी को यही सीखने की आवश्यकता है। हम अपने बच्चों को सिखाएं कि जीवन में धैर्य, विश्वास और लगन — ये तीन गुण किसी भी लक्ष्य तक पहुँचाते हैं। जैसे शबरी का विश्वास उन्हें राम तक ले गया।

✦ वह स्वर्णिम क्षण — राम की कुटिया में आगमन

सीता की खोज में वन-वन भटकते हुए एक दिन श्रीराम और लक्ष्मण मतंग ऋषि के आश्रम में पहुँचे। शबरी ने जब दूर से उनके चरण चिह्न देखे, तो उनका हृदय आनन्द से भर उठा। वर्षों की प्रतीक्षा का वह क्षण आ गया था।

वे दौड़कर उनके चरणों में गिर पड़ीं। आँखों से प्रेमाश्रु झरने लगे। वाणी अवरुद्ध हो गई। शब्द न थे, केवल भाव था — केवल प्रेम था।

"प्रभु! मैं एक अधम भीलनी हूँ। मुझ जैसी पापिन को देखने आप स्वयं पधारे — यह मेरा जन्म सफल हो गया।"

और प्रभु श्रीराम ने क्या किया? उन्होंने शबरी को उठाया, उनके हाथ अपने हाथों में लिए और बड़े प्रेम से बोले — 'माँ! मैं तो केवल भक्ति देखता हूँ। तुम्हारी भक्ति ने मुझे यहाँ खींच लिया।'

✦ जूठे बेर — भक्ति की पराकाष्ठा

शबरी ने प्रेम से वे बेर प्रस्तुत किए जो उन्होंने वर्षों से सँजोकर रखे थे। प्रेम में इतनी तल्लीन थीं कि वे प्रत्येक बेर को चखकर मीठा परखती थीं और फिर प्रभु को देती थीं।

समाज की दृष्टि से यह 'जूठा' था। परन्तु प्रेम की दृष्टि से यह अमृत था। और प्रभु श्रीराम ने उन बेरों को बड़े आनन्द से, बड़े प्रेम से ग्रहण किया।

लक्ष्मण जी कुछ कहने को हुए — परन्तु राम ने उन्हें रोका और कहा —

"लखन! देखो इन बेरों में प्रेम का स्वाद है। भक्त के प्रेम से बढ़कर कोई भोग नहीं।"

यह प्रसंग सनातन धर्म की एक महान शिक्षा देता है — ईश्वर को वस्तु नहीं चाहिए, भाव चाहिए। उन्हें सोने की थाली नहीं चाहिए, सच्चे हृदय का प्रेम चाहिए।

आज हम मन्दिरों में महँगे भोग चढ़ाते हैं, बड़े-बड़े आयोजन करते हैं — परन्तु यदि हृदय में प्रेम नहीं, तो सब व्यर्थ है। शबरी के जूठे बेर इसीलिए अमर हो गए — क्योंकि उनमें निःस्वार्थ प्रेम था।

✦ नवधा भक्ति — राम का अनमोल उपहार

शबरी को सर्वोच्च पुरस्कार देते हुए प्रभु राम ने उन्हें 'नवधा भक्ति' का ज्ञान दिया — ईश्वर तक पहुँचने के नौ सोपान। आइए, उन्हें संक्षेप में जानें:

१. सत्संग — सन्तों और सज्जनों की संगति करना। २. राम-कथा में प्रीति — भगवान की कथा सुनने में रुचि रखना। ३. गुरु-चरण-सेवा — अपने गुरु की निष्ठा से सेवा करना। ४. गुण-गान — प्रभु के गुणों का श्रद्धापूर्वक वर्णन करना। ५. मन्त्र-जप — राम-नाम का निरन्तर जप करना। ६. शम और दम — इन्द्रियों पर संयम रखना, मन को वश में रखना। ७. सर्वत्र राम दर्शन — प्रत्येक प्राणी में राम को देखना। ८. सन्तोष — जो मिले उसमें सन्तुष्ट रहना। ९. सरलता — छल-कपट से रहित सरल जीवन जीना।

यह नवधा भक्ति केवल शबरी के लिए नहीं — यह सम्पूर्ण मानवजाति के लिए राम का उपहार है।

✦ हमारे बच्चों के लिए संदेश

आज की पीढ़ी पूछती है — 'सनातन धर्म में क्या रखा है?' इसका उत्तर शबरी के प्रसंग में छिपा है।

शबरी ने हमें सिखाया कि जाति, कुल या धन से ईश्वर नहीं मिलते। ईश्वर मिलते हैं — सच्चे मन से, निःस्वार्थ प्रेम से, अटल विश्वास से। एक भीलनी जो समाज में 'अधम' मानी जाती थी — वह भगवान की कृपापात्र बनी।

यह सनातन धर्म की महानता है। यहाँ कोई भेद नहीं। यहाँ द्वार सबके लिए खुले हैं — केवल भक्ति का प्रवेश-पत्र चाहिए।

अपने बच्चों को शबरी की कहानी सुनाएं। उन्हें बताएं कि हमारा सनातन धर्म प्रेम का धर्म है, समानता का धर्म है, आत्मा का धर्म है।

✦ उपसंहार

शबरी और श्रीराम का यह मिलन रामायण का वह स्वर्णिम पृष्ठ है जो युगों-युगों तक मानवता को प्रेम, विश्वास और भक्ति की प्रेरणा देता रहेगा। जब भी हम निराश हों, जब भी मार्ग कठिन लगे — शबरी को याद करें।

उन्होंने जीवन भर प्रतीक्षा की — और भगवान स्वयं आए। हमें भी विश्वास रखना है — यदि हृदय में सच्चा प्रेम है, तो ईश्वर अवश्य मिलेंगे।

जय सियाराम! 🙏

निम्बार्क सम्प्रदाय और सनातन धर्म

— चार वैष्णव सम्प्रदायों में से एक महान परम्परा —

(स्रोत: Wikipedia, Bharatkosh एवं शोध ग्रन्थों पर आधारित मौलिक लेखन — नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क')

अध्याय — 2 : निम्बार्काचार्य — जीवन, दर्शन और देन

✦ प्रस्तावना — एक दिव्य विभूति

सनातन धर्म की अखण्ड ज्ञान-परम्परा में अनेक आचार्यों ने अपने दर्शन और भक्ति से समाज को नई दिशा दी। इन्हीं दिव्य विभूतियों में श्रीनिम्बार्काचार्य का स्थान अत्यन्त विशिष्ट और गौरवपूर्ण है। वे न केवल एक महान दार्शनिक थे, अपितु राधा-कृष्ण की युगल उपासना के प्रथम प्रचारक भी थे — जिन्होंने भक्ति का वह मार्ग प्रशस्त किया जिस पर आज करोड़ों भक्त चलते हैं।

वे सुदर्शन चक्र के अवतार माने जाते हैं — स्वयं भगवान विष्णु के दिव्यास्त्र का मानव रूप में अवतरण, जो सनातन धर्म की रक्षा और प्रचार-प्रसार हेतु इस धरा पर आए।

✦ जन्म और बाल्यकाल

परम्परा के अनुसार श्रीनिम्बार्काचार्य का जन्म आन्ध्र प्रदेश के वैदूर्यपट्टनम (वर्तमान मुन्गी ग्राम, पैठण, महाराष्ट्र) में हुआ था। उनके पिता महर्षि अरुण ऋषि और माता जयन्ती देवी थीं — दोनों ही परम वैष्णव भक्त।

बाल्यकाल में ही उनमें असाधारण तेज और वैराग्य के लक्षण प्रकट होने लगे थे। अल्पायु में ही माता-पिता के साथ वे उत्तर भारत, व्रजमण्डल में आ बसे — जहाँ गिरिराज गोवर्धन की सुरम्य तलहटी में उन्होंने वेद, शास्त्र, उपनिषद और सूत्रों का गहन अध्ययन किया।

उनके नाम की कथा भी अत्यन्त रोचक है। एक बार एक दिवाभोजी यति (एकांत में भोजन करने वाले संन्यासी) उनके आश्रम में सूर्यास्त के समय आए। अतिथि भूखा लौट जाए — यह धर्मशास्त्र के विरुद्ध था। तब श्री नियमानन्द ने अपने सुदर्शन स्वरूप के तेज को समीपस्थ नीम के वृक्ष पर स्थापित कर दिया — और सूर्य जैसा प्रकाश फैल गया। अतिथि भोजन कर तृप्त हुए। तभी से वे 'निम्बार्क' (नीम पर अर्क अर्थात् सूर्य) कहलाए।



"नियमानन्द सुदर्शन — नीम पर अर्क प्रकट किया, यति को भोजन कराया — यही है निम्बार्क नाम की महिमा।"

✦ गुरु-परम्परा — सनकादि सम्प्रदाय

निम्बार्क सम्प्रदाय को 'कुमार सम्प्रदाय' या 'हंस सम्प्रदाय' भी कहते हैं। इसकी ज्ञान-धारा का उद्गम स्वयं ब्रह्मा जी के मानस पुत्रों — सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार — से हुआ है।

परम्परा के अनुसार यह दिव्य ज्ञान श्री हंस भगवान ने सनकादि ऋषियों को दिया। सनकादि ने नारद मुनि को दिया। और नारद मुनि ने श्रीनिम्बार्काचार्य को दीक्षित किया – उन्हें अठारह अक्षरों वाला श्री गोपाल मन्त्र प्रदान किया तथा राधा-कृष्ण की युगल उपासना का रहस्य समझाया।

यह पहला अवसर था जब वृन्दावन की गोपियों के अतिरिक्त किसी ने पृथ्वी पर राधा और कृष्ण की एक साथ उपासना की — और यह महान कार्य श्रीनिम्बार्काचार्य ने किया।

(स्रोत: Encyclopedia MDPI, Wikipedia – Nimbarka Sampradaya)

✦ द्वैताद्वैत दर्शन — अद्भुत समन्वय

श्रीनिम्बार्काचार्य का दार्शनिक योगदान 'द्वैताद्वैत' या 'भेदाभेद' सिद्धान्त के रूप में सनातन दर्शन में अमर है। यह सिद्धान्त उन सभी विवादों का सुन्दर समाधान प्रस्तुत करता है जो 'आत्मा और परमात्मा एक हैं या अलग' इस प्रश्न को लेकर शताब्दियों से चले आ रहे थे।

चित्र: जगतगुरु निंबार्काचार्य भगवान

उनका उत्तर था — 'दोनों'। जीव (आत्मा) और ब्रह्म (परमात्मा) एक भी हैं और अलग भी। जैसे लहर समुद्र से अलग दिखती है, परन्तु है वह समुद्र का ही अंश — वैसे ही जीव ईश्वर से पृथक् दिखता है, किन्तु मूलतः उसी का अंश है।

द्वैत भी सत्य है + अद्वैत भी सत्य है = द्वैताद्वैत

निम्बार्काचार्य ने ज्ञान, कर्म और भक्ति — तीनों मार्गों को परस्पर विरोधी न मानकर एक-दूसरे के पूरक बताया। जो मार्ग प्रेमभाव से युक्त हो, चिदानन्दमय हो — वही सच्ची मुक्ति का द्वार है।

✦ बच्चों और युवाओं के लिए संदेश

आज की पीढ़ी प्रायः पूछती है — 'दर्शन इतना कठिन क्यों है?' श्रीनिम्बार्काचार्य का उत्तर सरल था — 'राधा-कृष्ण से प्रेम करो। उनकी भक्ति करो। यही सबसे सहज मार्ग है।'

वे हमें सिखाते हैं कि न तो केवल ज्ञान से मुक्ति मिलती है, न केवल कर्मकाण्ड से। जब प्रेम, ज्ञान और सेवा तीनों मिलकर चलें — तब जीवन धन्य होता है।

अपने बच्चों को बताएं — निम्बार्काचार्य ने कहा था: भगवान को कहीं और ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं। वे राधा-कृष्ण के रूप में प्रेम में हैं, भक्ति में हैं, सेवा में हैं।

अध्याय — 3 : राधा-कृष्ण युगल उपासना — प्रेम का सर्वोच्च रूप

✦ युगल उपासना — क्या और क्यों?

निम्बार्क सम्प्रदाय की सबसे विशिष्ट, सबसे मौलिक और सबसे प्रभावशाली देन है — राधा-कृष्ण की युगल उपासना। यह उपासना केवल पूजा-पद्धति नहीं — यह जीवन-दर्शन है, प्रेम का सर्वोच्च रूप है।

निम्बार्काचार्य वह प्रथम आचार्य हैं जिन्होंने राधा और कृष्ण को एक साथ — युगल रूप में — उपासना का केन्द्र बनाया। इससे पूर्व कृष्ण की उपासना होती थी, परन्तु राधा की युगल उपासना का प्रचार इस व्यापकता से पहले नहीं हुआ था।

"राधा कृष्ण की शक्ति हैं, कृष्ण राधा के प्राण हैं। दोनों एक हैं, दोनों अलग हैं — यही निम्बार्क दर्शन का सार है।"

✦ वृन्दावन — निम्बार्क सम्प्रदाय का केन्द्र

वृन्दावन में राधा-कृष्ण की अनेक लीलास्थलियों की देखभाल आज भी निम्बार्क सम्प्रदाय करता है। लोई बाजार, वृन्दावन में स्थित श्रीजी मन्दिर इस सम्प्रदाय का मुख्य केन्द्र है। मथुरा-वृन्दावन में असंख्य भक्त आज भी निम्बार्क के भक्तिमार्ग पर चलते हैं।

राजस्थान के सालेमाबाद में स्थित अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठ इस परम्परा का सर्वोच्च केन्द्र है। यहाँ से समस्त भारत में भक्ति का प्रचार होता है।

(स्रोत: Wikipedia — Nimbarka Sampradaya, Gaudiya History)

✦ पाँच संस्कार — निम्बार्क सम्प्रदाय की साधना-पद्धति

इस सम्प्रदाय में पाँच साधनाओं पर विशेष बल दिया जाता है जो भक्त को क्रमशः परमात्मा के निकट ले जाती हैं:

१. कर्म — अपने कर्तव्यों का पालन भगवत्-सेवा भाव से करना।

२. उपासना — राधा-कृष्ण की नित्य-नियमित युगल पूजा-अर्चना।

३. ज्ञान — वेद, उपनिषद और गीता का गहन अध्ययन।

४. वैराग्य — सांसारिक आसक्ति से क्रमशः मुक्ति।

५. भक्ति — निःस्वार्थ, निष्कपट, प्रेमपूर्ण ईश्वर-सेवा — यही परम साधना।

यह पाँच साधनाएं आज के जीवन में भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी हजारों वर्ष पूर्व थीं।

✦ आज के बच्चों के लिए — राधा-कृष्ण का संदेश

राधा-कृष्ण की युगल उपासना केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं — यह जीवन मूल्यों की शिक्षा है। राधा हमें सिखाती हैं — निःस्वार्थ प्रेम, समर्पण और निष्ठा। कृष्ण हमें सिखाते हैं — साहस, बुद्धि, कर्तव्यपरायणता और मुस्कान।

जब कोई बच्चा राधा-कृष्ण की कथा सुनता है, तो वह केवल भक्ति नहीं सीखता — वह प्रेम करना सीखता है, विपरीत परिस्थितियों में भी मुस्कुराना सीखता है, और जीवन के प्रत्येक पल को उत्सव की तरह जीना सीखता है।

यही है सनातन धर्म की महानता — यहाँ भक्ति भी शिक्षा है, प्रेम भी दर्शन है।

अध्याय — 4 : निम्बार्क सम्प्रदाय का प्रसार और आधुनिक प्रासंगिकता

✦ चार वैष्णव सम्प्रदाय — एक परिचय

सनातन धर्म में चार मुख्य वैष्णव सम्प्रदाय हैं जिन्हें 'वैष्णव चतुः सम्प्रदाय' कहा जाता है। ये चारों मिलकर भक्ति की अजस्र धारा को अखण्ड बनाए रखते हैं:

१. श्री सम्प्रदाय — रामानुजाचार्य प्रणीत, विशिष्टाद्वैत दर्शन।

२. ब्रह्म सम्प्रदाय — मध्वाचार्य प्रणीत, द्वैत दर्शन।

३. रुद्र सम्प्रदाय — विष्णुस्वामी प्रणीत, शुद्धाद्वैत दर्शन।

४. कुमार सम्प्रदाय — निम्बार्काचार्य प्रणीत, द्वैताद्वैत दर्शन।

निम्बार्क सम्प्रदाय इन चारों में से सबसे प्राचीन माना जाता है — क्योंकि इसकी परम्परा सनकादि ऋषियों से आती है जो स्वयं ब्रह्मा के प्रथम पुत्र थे।

(स्रोत: Wikipedia — Nimbarka Sampradaya, Bharatkosh)

✦ राजाश्रय और विस्तार

मध्यकाल में निम्बार्क सम्प्रदाय को अनेक राजाओं का आश्रय मिला। कश्मीर से लेकर मालवा तक इस सम्प्रदाय के अनुयायी फैले। काश्मीर नरेश अवन्तिवर्मन परम वैष्णव थे। मालवा के कई राजाओं ने विष्णु मन्दिर बनवाए और इस परम्परा को राजकीय संरक्षण दिया।

मध्य प्रदेश के खजुराहो में चन्देल राजाओं ने निम्बार्क परम्परा से प्रेरित होकर भव्य मन्दिरों का निर्माण किया। चन्देलवंशी यशोवर्मन् ने कन्नौज से विष्णु की प्रसिद्ध मूर्ति लाकर खजुराहो में स्थापित की। मध्य भारत में राधा-कृष्ण की लोककथाएँ और भजन-परम्परा इसी सम्प्रदाय की देन है।

✦ आधुनिक युग में निम्बार्क सम्प्रदाय

आज भी यह सम्प्रदाय लाखों भक्तों का आध्यात्मिक आधार है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और देश के अनेक राज्यों में इस सम्प्रदाय के मठ, मन्दिर और आश्रम भक्तों को दिशा दे रहे हैं।

वृन्दावन में श्रीजी मन्दिर, सालेमाबाद का निम्बार्काचार्य पीठ, और अनेक स्थानों पर राधा-कृष्ण की युगल उपासना आज भी इस अखण्ड परम्परा का जीवन्त प्रमाण है।

✦ क्या सनातन धर्म आज भी प्रासंगिक है?

कुछ लोग पूछते हैं — 'हजारों साल पुरानी परम्परा आज के युग में क्या काम आएगी?' इसका उत्तर निम्बार्क सम्प्रदाय की शिक्षाओं में छिपा है।

निम्बार्काचार्य ने कहा था — ज्ञान, कर्म और भक्ति तीनों की आवश्यकता है। आज के युग में भी यही सत्य है। जो व्यक्ति अपने कर्तव्य निभाता है, ज्ञान अर्जित करता है और अपने भीतर प्रेम जगाता है — वह सफल है, वह सुखी है, वह मुक्त है।

सनातन धर्म की यह शिक्षा किसी एक काल की नहीं — यह सनातन है, शाश्वत है। इसीलिए आज भी जब कोई राधा-कृष्ण का भजन सुनता है, तो उसके भीतर कुछ जागता है — वह है आत्मा की पुकार, सनातन की आवाज़।

✦ हमारे बच्चे और सनातन परम्परा

आज के बच्चे यदि निम्बार्क सम्प्रदाय की शिक्षाएं जानें, तो वे समझेंगे कि सनातन धर्म केवल अनुष्ठान नहीं — यह एक सम्पूर्ण जीवन-पद्धति है।

राधा-कृष्ण की प्रेम-कथा उन्हें निःस्वार्थ प्रेम सिखाएगी। द्वैताद्वैत दर्शन उन्हें बताएगा कि विरोधी विचार भी एक साथ सच हो सकते हैं — यह सहिष्णुता और खुलेपन की शिक्षा है। और नवधा भक्ति उन्हें बताएगी कि ईश्वर तक पहुँचने के अनेक मार्ग हैं।

सनातन धर्म ने कभी एक ही रास्ता नहीं थोपा — यहाँ हर आत्मा को अपना मार्ग चुनने की स्वतन्त्रता है। यही इसकी सबसे बड़ी शक्ति है।

"आओ लौट चलें — उस परम्परा की ओर जो हजारों वर्षों से हमारी आत्मा को पोषित करती आई है। यही है सनातन — यही है हमारी पहचान।" — नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क'

जय श्री राधे! जय निम्बार्काचार्य! 🙏

— नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क' | www.nareshswaminimbark.in

(यह लेख Wikipedia — Nimbarka Sampradaya, Bharatkosh, Encyclopedia MDPI एवं प्रामाणिक शोध ग्रन्थों पर आधारित मौलिक लेखन है। मूल स्रोत हेतु CC BY-SA लाइसेंस लागू।)

महाभारत — जीवन का महाग्रन्थ

अध्याय — 5 : भीष्म पितामह

— निष्ठा, त्याग और वचन के महायोद्धा —

✦ प्रस्तावना — एक अद्वितीय जीवन

महाभारत के असंख्य पात्रों में यदि किसी एक नाम से सम्पूर्ण निष्ठा, त्याग और वचन-पालन की परिभाषा दी जाए — तो वह नाम है भीष्म पितामह। वे गंगापुत्र थे, देवव्रत थे, परन्तु अपनी भीष्म प्रतिज्ञा के कारण वे भीष्म कहलाए — और इस नाम को उन्होंने जीवन के अन्तिम श्वास तक सार्थक किया।

उनका जीवन हमें सिखाता है कि एक सच्चा सनातनी अपने वचन से, अपने धर्म से, अपने कर्तव्य से कभी विचलित नहीं होता — चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी विकट क्यों न हों।

(स्रोत: Wikipedia — Bhishma, महाभारत भीष्म पर्व)

✦ जन्म और बाल्यकाल — देवव्रत से भीष्म तक

राजा शान्तनु और माँ गंगा के पुत्र देवव्रत बाल्यकाल से ही असाधारण प्रतिभा के धनी थे। महर्षि वशिष्ठ से वेद-शास्त्र और महर्षि परशुराम से धनुर्विद्या सीखकर वे अपने युग के सर्वश्रेष्ठ योद्धा बने। स्वयं उनके गुरु परशुराम ने कहा था — 'देवव्रत को युद्ध में जीतना असम्भव है।'



परन्तु इस महायोद्धा की सबसे बड़ी शक्ति उनकी तलवार नहीं — उनका चरित्र था। उनकी सबसे बड़ी विजय कोई युद्ध नहीं — उनका त्याग था।

✦ भीष्म प्रतिज्ञा — इतिहास का सबसे महान त्याग

राजा शान्तनु निषाद-कन्या सत्यवती पर मुग्ध हो गए। परन्तु सत्यवती के पिता ने शर्त रखी — 'मेरी पुत्री का पुत्र ही राजा बनेगा।' शान्तनु इस शर्त को स्वीकार नहीं कर सकते थे क्योंकि देवव्रत उनके युवराज थे।

जब देवव्रत को अपने पिता की व्यथा का पता चला, तो वे स्वयं सत्यवती के पिता के पास गए और बोले — 'मैं राजसिंहासन का त्याग करता हूँ।' परन्तु सत्यवती के पिता ने कहा — 'आपके पुत्र तो राज्य का दावा नहीं करेंगे, परन्तु आपके पौत्र?'

तब देवव्रत ने वह प्रतिज्ञा ली जिसने समस्त देवलोक को चकित कर दिया —

"मैं आजीवन ब्रह्मचारी रहूँगा। मेरा कोई पुत्र न होगा। और मैं कभी विवाह नहीं करूँगा।"

इस भीषण प्रतिज्ञा को सुनकर देवताओं ने आकाश से पुष्पवर्षा की और 'भीष्म' नाम से पुकारा — जिसका अर्थ है 'जिसने भीषण प्रतिज्ञा ली हो'। उनके पिता शान्तनु ने उन्हें वरदान दिया — 'तुम्हारी मृत्यु तुम्हारी इच्छा से होगी।'

चित्र : भीष्म पितामह

🌿 बच्चों के लिए शिक्षा: भीष्म ने हमें सिखाया — जो वचन दो, उसे निभाओ। चाहे कितनी भी कठिनाई आए। वचन ही सनातनी का सबसे बड़ा धन है।

✦ जीवन-भर का संघर्ष — धर्म और वफादारी के बीच

भीष्म का जीवन एक ऐसे महायोद्धा का जीवन था जो सत्य को जानता था, परन्तु अपने वचन और कर्तव्य के बन्धन में बँधा था। उन्होंने देखा कि दुर्योधन अधर्म कर रहा है। उन्होंने द्रौपदी का अपमान देखा। उन्होंने अनेक अन्याय देखे — परन्तु वे हस्तिनापुर के नमक के ऋणी थे, कौरवों के सेनापति होने के वचनबद्ध थे।

महाभारत युद्ध में वे कौरवों की ओर से लड़े — परन्तु उनके हृदय में पाण्डवों के प्रति प्रेम था। जब द्रौपदी ने शरशय्या पर लेटे भीष्म से पूछा — 'आपने मेरा चीरहरण क्यों नहीं रोका?' तब उन्होंने कहा —

"उस समय मैं कौरवों का अन्न खा रहा था। अन्न से विवेक ढँक जाता है। मैं यह जानता हूँ कि मुझसे भूल हुई।"

यह उत्तर भीष्म की महानता को और भी प्रकट करता है — वे अपनी कमज़ोरी को भी निष्कपट भाव से स्वीकार कर सके। यही सनातन धर्म का सत्यनिष्ठा-सिद्धान्त है।

✦ बाण-शय्या — जब मृत्यु भी प्रतीक्षा करती रही

महाभारत युद्ध के दसवें दिन, श्रीकृष्ण के परामर्श से अर्जुन ने शिखण्डी को ढाल बनाकर भीष्म पर बाण चलाए। भीष्म ने स्त्री-स्वरूप शिखण्डी पर अस्त्र नहीं उठाया – और असंख्य बाणों से बिंधकर धरती पर गिर पड़े।

परन्तु उन्हें इच्छा-मृत्यु का वरदान था। वे बाणों की शय्या पर लेटे रहे — 58 दिन। उत्तरायण की प्रतीक्षा में। शुभ मुहूर्त में देह त्यागने के लिए।

इन 58 दिनों में उन्होंने युधिष्ठिर को राजधर्म, वर्णधर्म, मोक्षधर्म का अद्भुत ज्ञान दिया — जो महाभारत के शान्तिपर्व में संकलित है। और अन्त में उन्होंने श्रीकृष्ण के सम्मुख विष्णुसहस्रनाम का पाठ किया —

"हे केशव! मेरे अन्तिम श्वास में आपका नाम हो — यही मेरी प्रार्थना है।"

मकर संक्रान्ति के पावन दिन, सूर्य के उत्तरायण होने पर, भीष्म पितामह ने अपना शरीर त्याग दिया। उनके जाते ही ऐसा लगा मानो सत्य का एक महास्तम्भ धरती से उठ गया।

(स्रोत: Wikipedia – Bhishma, Patrika, Republic Bharat, महाभारत शान्तिपर्व)

🌿 आधुनिक जीवन में सन्देश: भीष्म ने अपने अन्तिम क्षणों में भी ज्ञान दिया। हम भी अपने बड़े-बुज़ुर्गों से सीखें — उनका अनुभव हमारी सबसे बड़ी सम्पदा है।

✦ भीष्म और सनातन वैष्णव परम्परा

भीष्म पितामह का जीवन सनातन वैष्णव परम्परा का जीवन्त उदाहरण है। वे विष्णु के परम भक्त थे। उन्होंने अपने जीवन में कर्तव्य, वचन, अहिंसा और सत्य — इन्हीं चार स्तम्भों पर आचरण किया।

आज के युग में जब युवा पीढ़ी 'आदर्श कौन?' पूछती है — तो भीष्म का जीवन उत्तर है। वे सिखाते हैं — परिस्थिति चाहे जैसी भी हो, अपने मूल्यों से कभी मत हटो। वचन का पालन करो। बड़ों का आदर करो। और अन्त में — ईश्वर का नाम लो।

भीष्म पितामह केवल महाभारत के पात्र नहीं — वे सनातन धर्म के शाश्वत मूल्यों के प्रतीक हैं।

अध्याय — 6 : कर्ण — दानवीर, त्याग और जीवन की विडम्बना

— जब नियति ने एक महानायक के साथ अन्याय किया —

✦ प्रस्तावना — महाभारत का सबसे जटिल पात्र

महाभारत में यदि कोई पात्र सबसे अधिक हृदय को द्रवित करता है, सबसे अधिक सोचने पर विवश करता है — तो वह हैं कर्ण। वे सूर्यपुत्र थे, परन्तु सूत-पुत्र कहलाए। वे महादानी थे, परन्तु जीवन-भर अभाव झेला। वे पाण्डवों के बड़े भाई थे, परन्तु शत्रु पक्ष में लड़े। उनका जीवन एक ऐसी विडम्बना है जो हर युग में प्रासंगिक है।

कर्ण का जीवन हमें सिखाता है — सम्मान केवल जन्म से नहीं, कर्म से मिलता है। और दान — सच्चे दान की कोई सीमा नहीं होती।

(स्रोत: Wikipedia — Karna, Mahabharata Karna Parva, Bharatkosh)

✦ जन्म की विडम्बना — नदी में बहाया गया सूर्यपुत्र

कुन्ती ने विवाह से पूर्व एक वरदान की परीक्षा लेने के लिए सूर्यदेव का आह्वान किया। सूर्यदेव प्रकट हुए और कुन्ती को एक दिव्य पुत्र की प्राप्ति हुई — जो जन्म से ही स्वर्णिम कवच और कुण्डल धारण किए हुए था।

परन्तु अविवाहित होने के कारण कुन्ती ने समाज के भय से उस शिशु को एक टोकरी में रखकर गंगा में प्रवाहित कर दिया। वह शिशु था — कर्ण।

उस शिशु को रथवाहक अधिरथ और उनकी पत्नी राधा ने नदी से निकाला और पाला-पोसा। इसीलिए कर्ण को 'राधेय' भी कहा जाता है। परन्तु समाज ने उन्हें सदा 'सूत-पुत्र' कहकर अपमानित किया।

"जन्म से अभिशप्त, परन्तु कर्म से महान — यही था कर्ण का जीवन।"

🌿 बच्चों के लिए शिक्षा: कर्ण का जीवन बताता है — कभी किसी को जन्म या जाति से मत आँको। मनुष्य की पहचान उसके कर्म से होती है।

✦ शिक्षा और संघर्ष — हर द्वार पर अस्वीकृति

कर्ण महान योद्धा बनना चाहते थे। गुरु द्रोणाचार्य के पास गए — परन्तु 'सूत-पुत्र' कहकर अस्वीकार कर दिए गए। तब उन्होंने स्वयं को ब्राह्मण बताकर गुरु परशुराम से धनुर्विद्या सीखी और सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बने।

परन्तु गुरु परशुराम को जब सत्य ज्ञात हुआ, तो उन्होंने शाप दिया — 'जब तुम्हें सबसे अधिक आवश्यकता होगी, तब तुम्हारी विद्या स्मृति से लुप्त हो जाएगी।' यह शाप कर्ण के जीवन की सबसे बड़ी त्रासदियों में से एक बना।

✦ कवच-कुण्डल दान — दानवीर की पराकाष्ठा

कुरुक्षेत्र युद्ध से पूर्व, देवराज इन्द्र जानते थे कि जब तक कर्ण के पास जन्मजात कवच और कुण्डल हैं, उन्हें कोई नहीं जीत सकता। वे ब्राह्मण का वेश धारण कर कर्ण के पास आए।

सूर्यदेव ने पहले ही कर्ण को चेतावनी दी थी — 'इन्द्र आएंगे, अपना कवच-कुण्डल मत देना।' परन्तु कर्ण ने कहा —

"पिता! मैंने प्रण लिया है कि मेरे द्वार से कोई याचक खाली नहीं जाएगा। यदि इन्द्र भी माँगने आएं, तो मैं दे दूँगा।"

इन्द्र ब्राह्मण-वेश में आए। कर्ण ने पहचान लिया। फिर भी उन्होंने अपने शरीर से कवच और कुण्डल काटकर — रक्त बहाते हुए — दे दिए। इन्द्र इस दान से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने कर्ण को अपनी अमोघ शक्ति 'वासवी शक्ति' प्रदान की — जो एक बार प्रयोग की जा सकती थी।

(स्रोत: Wikipedia — Karna, sandeepa.in — Karna Kavach Kundal, mythgyaan.com)

🌿 सनातन शिक्षा: कर्ण का यह दान इसलिए महान है क्योंकि उन्होंने अपने प्राण-रक्षक कवच को दान किया — यह जानते हुए भी कि इससे उनकी मृत्यु निश्चित है। यही है सच्चा त्याग।

✦ कुन्ती का प्रकटीकरण — जब सत्य देर से आया

युद्ध से पूर्व श्रीकृष्ण ने कर्ण को उनका सच बताया — 'तुम कुन्तीपुत्र हो, पाण्डवों के बड़े भाई हो। पाण्डव पक्ष में आ जाओ।' परन्तु कर्ण ने मित्रधर्म को नहीं छोड़ा। उन्होंने कहा —

"दुर्योधन ने मुझे तब अपनाया जब सारा संसार मुझे ठुकरा रहा था। मित्रधर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं।"

माँ कुन्ती भी कर्ण के पास आईं — और सत्य बताया। कर्ण ने कहा — 'माँ, आपने मुझे जन्म दिया, परन्तु माँ राधा ने मुझे जीवन दिया। मैं उनका पुत्र हूँ।' उन्होंने कुन्ती को वचन दिया — 'अर्जुन के अतिरिक्त किसी पाण्डव को नहीं मारूँगा।'

और उन्होंने यह वचन निभाया — युद्ध में युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव को जीवित छोड़ दिया।

✦ कर्ण की मृत्यु — नियति की अन्तिम विडम्बना

कुरुक्षेत्र युद्ध के सत्रहवें दिन कर्ण और अर्जुन का महायुद्ध हुआ। युद्ध के सबसे निर्णायक क्षण में गुरु परशुराम का शाप फलित हुआ — कर्ण की विद्या स्मृति से लुप्त हो गई। रथ का पहिया धरती में धँस गया — ब्राह्मण के शाप के कारण।

कर्ण रथ से उतरे, पहिया निकालने लगे। अर्जुन ने बाण चलाया — और कर्ण धराशायी हो गए। उनके अन्तिम क्षणों में जब श्रीकृष्ण ब्राह्मण-वेश में आए और उनके जीवन-भर का पुण्य माँगा — कर्ण ने वह भी दे दिया। हँसते हुए।

"दान देने से बड़ा कोई धर्म नहीं। मैंने जो दिया — वह किसी लोभ से नहीं, केवल धर्म से दिया।"

कर्ण का जीवन समाप्त हुआ — परन्तु उनकी कीर्ति अमर हो गई। महाभारत ने कहा — 'दानवीर कर्ण के समान दाता न हुआ, न होगा।'

(स्रोत: Wikipedia — Karna, Karna Parva, Mahabharata; mythgyaan.com; karna.org)

✦ कर्ण और सनातन वैष्णव बैरागी परम्परा का सन्देश

सनातन वैष्णव बैरागी परम्परा वैराग्य, दान, त्याग और प्रेम पर आधारित है। कर्ण इन्हीं मूल्यों के जीवन्त प्रतीक हैं। उन्होंने जाति-भेद को नकारा। उन्होंने मित्रधर्म को सर्वोच्च माना। उन्होंने दान को अपने प्राण से भी अधिक मूल्यवान समझा।

आज जब हमारे बच्चे 'Hero' की तलाश करते हैं — तो उन्हें कर्ण का जीवन दिखाएं। कर्ण बताते हैं कि असली नायक वह होता है जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपने मूल्यों से नहीं डिगता।

🌿 **माता-पिता से निवेदन: अपने बच्चों को कर्ण की कहानी सुनाएं — जाति नहीं, कर्म बड़ा होता है। दान देना सबसे बड़ा धर्म है। और मित्र का साथ कभी मत छोड़ो।**

जय श्री हरि! जय सनातन! 🙏

— नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क' | www.nareshswaminimbark.in

(यह लेख Wikipedia, Bharatkosh, महाभारत ग्रन्थ एवं प्रामाणिक स्रोतों पर आधारित मौलिक लेखन है।)

🚩 सनातन वैष्णव बैरागी परम्परा — विशेष श्रृंखला 🚩

सनातन वैष्णव बैरागी — भूले हुए योद्धाओं की गाथा

अध्याय — 7 : वीर बंदा बैरागी

— लक्ष्मण देव से माधो दास बैरागी और अन्ततः वीर योद्धा तक —

जन्म: 27 अक्टूबर 1670 | बलिदान: 9 जून 1716 | दिल्ली

(स्रोत: Wikipedia — Banda Singh Bahadur; Organiser.org — Savarkar on Banda Bairagi; utisthbharat.com; नरेश दास वैष्णव निम्बार्क — मौलिक शोध)

✦ प्रस्तावना — वह इतिहास जो छुपाया गया

सनातन वैष्णव बैरागी परम्परा में एक ऐसा नाम है जो इतिहास के पन्नों में दबा रहा — परन्तु जिसकी शहादत ने मुगल साम्राज्य की नींव हिला दी। वह नाम है — वीर बंदा बैरागी।

वे एक वैष्णव संन्यासी थे जिन्होंने कमण्डल छोड़ तलवार उठाई — धर्म की रक्षा के लिए। वे निम्बार्क सम्प्रदाय और वैष्णव बैरागी परम्परा के उस महायोद्धा थे जिन्होंने पहली बार पंजाब में मुगल शासन को उखाड़ फेंका और किसानों को भूमि-अधिकार दिए।



⚠️ **ऐतिहासिक प्रश्न: हरियाणा सरकार के अपने कैलेंडर (2025) में नाम है — 'वीर बंदा बैरागी'। परन्तु कक्षा 8 के पाठ्यक्रम में 'बंदा सिंह बहादुर' क्यों? — शोधकर्ता: नरेश दास वैष्णव निम्बार्क**

✦ जन्म — लक्ष्मण देव से माधो दास बैरागी

27 अक्टूबर 1670 को राजौरी जिले, जम्मू में एक राजपूत परिवार में लक्ष्मण देव का जन्म हुआ। भारद्वाज गोत्र के इस बालक में बचपन से ही असाधारण साहस और वैराग्य के लक्षण थे।

किशोरावस्था में एक दिन शिकार करते समय एक गर्भवती हिरनी उनके बाण से घायल हुई। उसके गर्भ से शिशु निकला और तड़पकर मर गया। इस दृश्य ने लक्ष्मण देव को भीतर से तोड़ दिया। उन्होंने तत्काल शस्त्र त्याग किए, गृह-त्याग किया और संन्यास की राह पकड़ी।

जानकी दास नामक एक बैरागी संत के सान्निध्य में उन्हें नया नाम मिला — माधो दास बैरागी। वे वैष्णव परम्परा में दीक्षित हुए और अनेक तीर्थों की यात्रा करते हुए अन्ततः महाराष्ट्र के नांदेड़ में गोदावरी के तट पर अपना मठ स्थापित किया।

(स्रोत: Wikipedia — Banda Singh Bahadur; jammukashmirnow.com)

🌿 **शिक्षा: एक हिरनी की मृत्यु ने एक योद्धा को संन्यासी बनाया। और एक गुरु के वचन ने उस संन्यासी को फिर योद्धा बनाया — यही है जीवन की अद्भुत यात्रा।**

चित्र : महायोद्धा वीर बंदा बैरागी

✦ गुरु गोबिंद सिंह जी से भेंट — नांदेड़, सितम्बर 1708

सितम्बर 1708 में दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंह जी नांदेड़ पधारे। उन्होंने माधो दास के मठ में आकर विश्राम किया। जब माधो दास ने गुरुजी को देखा — वे उनके तेज और दिव्य व्यक्तित्व से अभिभूत हो गए।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने माधो दास को पंजाब में मुगलों द्वारा हिंदुओं और सिखों पर किए जा रहे अत्याचारों की जानकारी दी — साहिबज़ादों को दीवारों में चिनवाने की, गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान की।

माधो दास का रक्त उबल उठा। उन्होंने गुरुजी के चरणों में साष्टांग प्रणाम किया और बोले —

"मैं आपका बंदा हूँ। आप जो आदेश दें — वह करूँगा।"

गुरु गोबिंद सिंह जी ने उन्हें खण्डे की पाहुल दी, नया नाम दिया — और पंजाब की ओर मुगलों के विरुद्ध भेजा। तभी से माधो दास बैरागी — बंदा बैरागी — के नाम से इतिहास में अमर हो गए।

(स्रोत: Wikipedia — Banda Singh Bahadur; Dharmapedia — Banda Bairagi)

✦ निम्बार्क सम्प्रदाय और वीर बंदा बैरागी का अटूट सम्बन्ध

21 फरवरी 1709 को वीर बंदा बैरागी ने सोनीपत के निकट 'सेहरी खाँडा' ग्राम में निम्बार्क सम्प्रदाय और निर्मोही अखाड़े के संत महंत किशोर दास जी के मठ को अपना प्रथम सैनिक मुख्यालय बनाया।

यह ऐतिहासिक तथ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है — क्योंकि यह सिद्ध करता है कि वीर बंदा बैरागी की क्रान्ति की नींव एक वैष्णव बैरागी मठ में रखी गई थी। यहीं से उन्होंने अपनी सेना का गठन किया — मात्र आठ महीनों में।

(स्रोत: utisthbharat.com; Organiser.org — Amar Mrit; नरेश दास वैष्णव निम्बार्क शोध)

सनातन वैष्णव बैरागी परम्परा ने न केवल मन्दिर बनाए — बल्कि आवश्यकता पड़ने पर धर्म की रक्षा हेतु शस्त्र भी उठाए।

✦ ऐतिहासिक विजय — मुगल साम्राज्य का पहला पराजय

नवम्बर 1709 में बंदा बैरागी ने सोनीपत की मुगल ट्रेजरी पर आक्रमण किया। फिर सामाना (पटियाला के पास) पर विजय पाई — वह शहर जहाँ गुरु तेग बहादुर जी का सिर काटने वाला जल्लाद रहता था।

उन्होंने लोहगढ़ को अपनी राजधानी बनाया, सिक्के जारी किए और किसानों को उनकी भूमि का स्वामित्व दिया — यह भारत में पहला भूमि-सुधार था। मुगल बादशाह बहादुर शाह प्रथम ने स्वयं कहा — 'बंदा बैरागी से मुगल साम्राज्य को सबसे बड़ा खतरा है।'

(स्रोत: Wikipedia — Banda Singh Bahadur; drishticuet.com — Veer Banda Bairagi)

✦ 1935 से पूर्व के प्रमाण — 'बंदा बैरागी' ही प्रामाणिक नाम

तीन महान साहित्यकारों ने उन्हें 'बंदा बैरागी' नाम से लिखा:

• वीर सावरकर ने मराठी में 'अमर मृत' कविता लिखी — जिसमें उन्हें वैष्णव संत और बंदा बैरागी कहा।

• नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ने बांग्ला में 'बंदी वीर' लिखी — आज भी बंगाल के विद्यालयों में पढ़ाई जाती है।

• राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने हिंदी में 'वीर वैरागी' लिखी — माधव दास बैरागी और गुरु गोबिंद सिंह जी के संवाद पर।

स्रोत	वर्ष	प्रयुक्त नाम
John Surman — EIC Records	1716	Bandu / Bairagi
रतन सिंह भंगू — प्राचीन पंथ प्रकाश	1843	बंदा बैरागी
William Irvine — Later Mughals	1904	बंदा बैरागी
वीर सावरकर — अमर मृत	1920s	बंदा बैरागी
रवींद्रनाथ टैगोर — बंदी वीर	1920s	बंदा बैरागी
डॉ. गंडा सिंह	1935	पहली बार 'बंदा सिंह बहादुर' प्रमुखता से

(तालिका: नरेश दास वैष्णव निम्बार्क — मौलिक शोध | www.nareshswaminimbark.in)

✦ बलिदान — 9 जून 1716, दिल्ली

1715 में गुरदास नंगल के युद्ध में घिरने के बाद बंदा बैरागी और उनके 800 साथियों को बन्दी बनाया गया। उन्हें दिल्ली लाया गया। मुगल बादशाह फर्रुखसियर ने उन्हें धर्म-परिवर्तन का प्रस्ताव दिया — बंदा बैरागी ने अस्वीकार किया।

9 जून 1716 को दिल्ली में उन्हें अत्यन्त क्रूर यातनाएँ देकर शहीद किया गया। उनके सामने उनके शिशु पुत्र को मारा गया — फिर भी वे विचलित नहीं हुए। अन्त तक उनके होंठों पर 'राधे-राधे' था।

"वैष्णव बैरागी ने कमण्डल से तलवार उठाई — और अन्त तक भगवान का नाम नहीं छोड़ा।"

🌿 **सन्देश: वीर बंदा बैरागी ने सिखाया — धर्म की रक्षा केवल पूजा से नहीं होती, आवश्यकता पड़ने पर बलिदान से भी होती है। वे सनातन वैष्णव बैरागी परम्परा के सबसे दीप्तिमान सितारे हैं।**

अध्याय — 8 : सनातन वैष्णव बैरागी परम्परा

— वह परम्परा जिसने मन्दिर भी बनाए और मुगलों से भी लड़े —

✦ वैष्णव बैरागी — परिचय

'बैरागी' शब्द वैराग्य से बना है — अर्थात् सांसारिक आसक्ति से मुक्त। विष्णु के उपासक ब्राह्मणों को वैष्णव या बैरागी कहा जाता है। वैष्णव सम्प्रदाय के समस्त प्राचीन मन्दिरों की अर्चना वैष्णव-ब्राह्मणों (बैरागी) द्वारा ही की जाती है।

पुराणों में वैष्णवों के चार सम्प्रदाय वर्णित हैं — रामानन्द सम्प्रदाय, निम्बार्क सम्प्रदाय, मध्वाचार्य सम्प्रदाय और विष्णुस्वामी सम्प्रदाय। वैष्णवीय परम्परा कर्मकाण्ड पर नहीं — भक्तिमार्ग पर अधिक बल देती है।

(स्रोत: Wikipedia — Bairagi (caste), Bairagi Brahmin (caste); Bharatkosh)

✦ सृष्टि से परम्परा — सनकादि से आज तक

वेदों और पुराणों के अनुसार — सृष्टि के आरम्भ में ही भगवान श्री हरि विष्णु ने ब्रह्मा को, और ब्रह्माजी ने सर्वप्रथम सनकादि ऋषियों और सप्तर्षियों की उत्पत्ति की — वे सर्वप्रथम वैष्णव कहलाए। यही है सनातन वैष्णव परम्परा की अखण्ड ज्ञान-धारा।

इस परम्परा में गृहस्थ और विरक्त — दोनों प्रकार के अनुयायी हैं। गुरुगद्दी के संचालक भी दोनों वर्गों में पाए जाते हैं। आचार्य और भक्तगण राधा-कृष्ण की युगल उपासना और भजन-ध्यान की ओर उन्मुख रहते हैं।

✦ तीन प्रमुख बैरागी अखाड़े

सनातन वैष्णव बैरागी परम्परा में तीन प्रमुख अखाड़े हैं जो कुम्भ मेले में स्नान का अधिकार रखते हैं:

१. निर्मोही अखाड़ा — श्री रामानन्द सम्प्रदाय से सम्बद्ध।

२. दिगम्बर अखाड़ा — वैष्णव परम्परा का अत्यन्त प्राचीन अखाड़ा।

३. निर्वाणी अखाड़ा — राम-उपासना पर केन्द्रित।

(स्रोत: Wikipedia — Bairagi (caste))

✦ वैष्णव बैरागी — योद्धा भी, सन्त भी

सनातन वैष्णव बैरागी परम्परा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके महापुरुषों ने सन्त-जीवन और योद्धा-जीवन — दोनों को एक साथ जीया। जब मुगल आक्रान्ताओं ने मन्दिर तोड़े, हिंदुओं पर अत्याचार किए — तब इन्हीं वैष्णव बैरागी संन्यासियों ने कमण्डल के साथ तलवार भी उठाई।

वीर बंदा बैरागी इसके सबसे प्रज्ज्वलित उदाहरण हैं। परन्तु इतिहास में अनेक ऐसे बैरागी महन्त और संत हुए जिन्होंने अपने मठों से सेनाएं संगठित कीं, राज्य स्थापित किए और सनातन धर्म की रक्षा की।

छुईखदान राज्य (सन् 1750) की स्थापना महंत रूप दास बैरागी ने की — यह बैरागी राज्य का एक ऐतिहासिक प्रमाण है।

(स्रोत: Wikipedia — Bairagi (caste) Hindi; Naresh Das Vaishnav Nimbark शोध)

✦ क्रमशः श्लोक — वैराग्य की महिमा

नाम वैराग्य दश विप्राणाम्, कर्म वैराग्यं शतानि च। ज्ञान वैराग्यं मम समः, त्याग वैराग्यं मम दुर्लभः॥

अर्थात् — श्रीकृष्ण भगवान कहते हैं: जो नाम से वैरागी है वह दस ब्राह्मणों के बराबर है, जो कर्म से वैरागी है वह सौ के बराबर है, जो ज्ञान से वैरागी है वह मेरे (कृष्ण के) समान है, और जो त्याग से वैरागी है — वह मुझे दुर्लभ है अर्थात् सबसे श्रेष्ठ है।

(स्रोत: gkexams.com — Bairagi Jati Itihas)

✦ आज के युग में — वैष्णव बैरागी परम्परा का महत्त्व

आज जब हमारे बच्चे अपनी जड़ों से कट रहे हैं — तब यह परम्परा और भी प्रासंगिक हो जाती है। सनातन वैष्णव बैरागी परम्परा हमें सिखाती है:

• वैराग्य — आसक्ति से मुक्ति — यही सच्चे सुख का मार्ग है।

• भक्ति — राधा-कृष्ण की निःस्वार्थ उपासना — यही जीवन का केन्द्र है।

• सेवा — समाज की रक्षा — यही सच्चा धर्म है।

• त्याग — स्वयं से पहले धर्म — यही सनातनी की पहचान है।

🌿 **माता-पिता से निवेदन: अपने बच्चों को वीर बंदा बैरागी की कहानी सुनाएं। उन्हें बताएं कि हमारे संन्यासी केवल मन्दिर में नहीं बैठते थे — वे आवश्यकता पड़ने पर युद्ध-भूमि में भी उतरते थे। यही है सनातन वैष्णव बैरागी की गौरव-गाथा।**

✦ निष्कर्ष — अमर परम्परा

सनातन वैष्णव बैरागी परम्परा — हंस भगवान से सनकादि, सनकादि से नारद, नारद से निम्बार्काचार्य, और आगे असंख्य आचार्यों, सन्तों और वीर बैरागी योद्धाओं तक — यह अखण्ड परम्परा हजारों वर्षों से भारत की आत्मा को जीवित रखे हुए है।

जब तक राधा-कृष्ण का नाम है, जब तक गोवर्धन और वृन्दावन है, जब तक निम्बार्काचार्य पीठ सालेमाबाद से ज्ञान का प्रकाश फैल रहा है — तब तक यह परम्परा अमर है।

"आओ लौट चलें — उस परम्परा की ओर जिसने हमें बनाया है, जिसने हमारी रक्षा की है और जो हमारी आत्मा में आज भी जीवित है।" — नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क'

🚩 **जय वीर बंदा बैरागी! जय सनातन वैष्णव बैरागी परम्परा!** 🚩

— नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क'

सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी | सनातन वैष्णव इतिहासकार | www.nareshswaminimbark.in

अध्याय — 9 : सनातन किसे कहते हैं?

– वह सत्य जो अनादि है, अनन्त है, शाश्वत है –

(स्रोत: Wikipedia – सनातन धर्म; Bharatkosh; Hi.Wikipedia; मौलिक लेखन – नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क')

✦ 'सनातन' शब्द का अर्थ – भाषा से समझें

संस्कृत भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है – 'सना' अर्थात् प्राचीनकाल से, और 'तन' अर्थात् जो चला आ रहा है। इस प्रकार 'सनातन' का सम्पूर्ण अर्थ है – वह जो सदा से है, जो आज भी है, और जो सदा रहेगा। जिसका न आदि है, न अन्त।

'धर्म' शब्द संस्कृत की मूल धातु 'धृ' से बना है – जिसका अर्थ है 'धारण करना'। अर्थात् धर्म वह है जो किसी को धारण किए रहे, जो उसे टिकाए रखे। जैसे – जल का धर्म शीतलता है, सूर्य का धर्म प्रकाश है, अग्नि का धर्म ऊष्मा है – उसी प्रकार मनुष्य का धर्म है – सत्य, प्रेम, करुणा और न्याय।

(स्रोत: Wikipedia – सनातन धर्म Hindi)

सनातन = शाश्वत + सत्य + सम्पूर्ण जीवन-पद्धति

✦ सनातन धर्म क्या है? – सरल भाषा में

सनातन धर्म विश्व का सबसे प्राचीन जीवित धर्म है। यह केवल पूजा-पाठ नहीं है – यह एक सम्पूर्ण जीवन-दर्शन है। इसमें परमात्मा को साकार और निराकार – दोनों रूपों में स्वीकार किया गया है। यह वेदों पर आधारित धर्म है जो अपने भीतर अनेक उपासना-पद्धतियाँ, दर्शन, सम्प्रदाय और विचारधाराएं समेटे हुए है।

यह कोई एक व्यक्ति द्वारा, एक समय में, एक स्थान पर स्थापित धर्म नहीं है। यह असंख्य ऋषियों, मुनियों, संतों और आचार्यों की साधना, तपस्या और अनुभव का अखण्ड संकलन है – जो हजारों वर्षों में परिष्कृत होता रहा।

(स्रोत: Bharatkosh – सनातन धर्म)

✦ सनातन के दस मूल गुण – जो हर युग में प्रासंगिक हैं

Wikipedia के अनुसार सनातन धर्म में दस सामान्य कर्तव्य बताए गए हैं जो प्रत्येक मनुष्य के लिए हैं – जाति, वर्ण, लिंग या देश का भेद किए बिना:

***१.** सत्य – सदा सत्य बोलना और सत्य पर आचरण करना।*

***२.** अहिंसा – किसी जीव को शरीर, मन या वाणी से हानि न पहुँचाना।*

***३.** पवित्रता – शरीर, मन और वाणी की शुद्धता।*

***४.** शुभभाव – सभी के प्रति मंगलकारी विचार रखना।*

***५.** दया – सभी प्राणियों के प्रति करुणा।*

***६.** धैर्य – विपरीत परिस्थितियों में भी स्थिर रहना।*

***७.** सहनशीलता – क्षमा और सहिष्णुता।*

***८.** इन्द्रिय-संयम – इच्छाओं और इन्द्रियों पर नियंत्रण।*

***९.** दान – निःस्वार्थ भाव से देना।*

***१०.** संयम – अनुशासित और नियमबद्ध जीवन।*

(स्रोत: Wikipedia – सनातन धर्म Hindi)

🌿 सोचें: क्या ये दस गुण किसी एक धर्म के हैं? नहीं – ये मानवता के सार्वभौमिक मूल्य हैं। इसीलिए सनातन को 'मानवता का धर्म' कहा जाता है।

✦ सनातन धर्म की विशेषताएं – जो इसे अनोखा बनाती हैं

सनातन धर्म विश्व के अन्य धर्मों से इसलिए भिन्न है क्योंकि:

• यह एकेश्वरवादी है – एक ही परम-सत्ता को अनेक नामों और रूपों में पूजा जाता है। 'एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति' – सत्य एक है, ज्ञानी उसे अनेक नामों से जानते हैं।

• यह सर्वसमावेशी है – यहाँ सभी मार्ग स्वीकार्य हैं। ज्ञान-मार्ग, भक्ति-मार्ग, कर्म-मार्ग – सभी ईश्वर तक पहुँचने के मार्ग हैं।

• यह वैज्ञानिक है – इसमें प्रश्न पूछने की स्वतन्त्रता है। 'नेति नेति' – 'यह नहीं, यह नहीं' – सत्य की निरन्तर खोज ही इसकी पद्धति है।

• यह परिवर्तनशील है – राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुषों ने इसमें समय-समय पर आवश्यक सुधार किए। परन्तु मूल-तत्त्व सदा अखण्ड रहे।

(स्रोत: Wikipedia – सनातन धर्म; hiwiki.iiit.ac.in)

✦ चार पुरुषार्थ – जीवन के चार लक्ष्य

सनातन धर्म ने मनुष्य जीवन के चार लक्ष्य बताए हैं – जिन्हें 'चतुर्विध पुरुषार्थ' कहते हैं। ये हैं:

१. धर्म – अपने कर्तव्यों का पालन, नैतिक आचरण।

२. अर्थ – जीवन-निर्वाह के लिए सम्पत्ति और साधनों का अर्जन – किन्तु धर्म की सीमा में।

३. काम – जीवन की स्वाभाविक इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति – किन्तु नियमबद्ध रूप से।

४. मोक्ष – सभी बन्धनों से मुक्ति, परमात्मा से मिलन – यही जीवन का परम लक्ष्य।

🌿 आधुनिक जीवन में: आज का युवा केवल 'अर्थ' (धन) के पीछे भाग रहा है। इसीलिए तनाव है, अवसाद है, असन्तोष है। सनातन ने हजारों साल पहले ही बताया – जीवन केवल धन से नहीं, धर्म, काम, मोक्ष – इन चारों के सन्तुलन से पूर्ण होता है।

(स्रोत: alotusinthemud.com – Four Goals of Human Life)

✦ सनातन धर्म – विश्व को भारत का उपहार

सनातन धर्म ने विश्व को अनेक अनमोल उपहार दिए हैं – योग, ध्यान, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र, संगीत, नृत्य, वास्तुकला और दर्शन। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' – 'सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है' – यह विचार विश्व के किसी अन्य धर्म में इतनी स्पष्टता से नहीं मिलता।

'अहिंसा परमो धर्मः' – अहिंसा सर्वोच्च धर्म है – यह विचार महात्मा गाँधी के माध्यम से विश्व को मिला। डॉ. अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था – 'जब मैं हिंदू दर्शन पढ़ता हूँ तो लगता है कि विज्ञान ने जो सत्य खोजा है, वह सनातन ने हजारों साल पहले ही जान लिया था।'

सनातन धर्म कोई पंथ नहीं – यह मानवता की सबसे पुरानी, सबसे गहरी और सबसे व्यापक ज्ञान-परम्परा है।🕉 सनातन बोध – मूल श्रृंखला 🕉

सनातन – जानो, समझो, जियो

अध्याय – 9 : सनातन किसे कहते हैं?

– वह सत्य जो अनादि है, अनन्त है, शाश्वत है –

(स्रोत: Wikipedia – सनातन धर्म; Bharatkosh; Hi.Wikipedia; मौलिक लेखन – नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क')

✦ 'सनातन' शब्द का अर्थ – भाषा से समझें

संस्कृत भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है – 'सना' अर्थात् प्राचीनकाल से, और 'तन' अर्थात् जो चला आ रहा है। इस प्रकार 'सनातन' का सम्पूर्ण अर्थ है – वह जो सदा से है, जो आज भी है, और जो सदा रहेगा। जिसका न आदि है, न अन्त।

'धर्म' शब्द संस्कृत की मूल धातु 'धृ' से बना है – जिसका अर्थ है 'धारण करना'। अर्थात् धर्म वह है जो किसी को धारण किए रहे, जो उसे टिकाए रखे। जैसे – जल का धर्म शीतलता है, सूर्य का धर्म प्रकाश है, अग्नि का धर्म ऊष्मा है – उसी प्रकार मनुष्य का धर्म है – सत्य, प्रेम, करुणा और न्याय।

(स्रोत: Wikipedia – सनातन धर्म Hindi)

सनातन = शाश्वत + सत्य + सम्पूर्ण जीवन-पद्धति

✦ सनातन धर्म क्या है? – सरल भाषा में

सनातन धर्म विश्व का सबसे प्राचीन जीवित धर्म है। यह केवल पूजा-पाठ नहीं है – यह एक सम्पूर्ण जीवन-दर्शन है। इसमें परमात्मा को साकार और निराकार – दोनों रूपों में स्वीकार किया गया है। यह वेदों पर आधारित धर्म है जो अपने भीतर अनेक उपासना-पद्धतियाँ, दर्शन, सम्प्रदाय और विचारधाराएं समेटे हुए है।

यह कोई एक व्यक्ति द्वारा, एक समय में, एक स्थान पर स्थापित धर्म नहीं है। यह असंख्य ऋषियों, मुनियों, संतों और आचार्यों की साधना, तपस्या और अनुभव का अखण्ड संकलन है – जो हजारों वर्षों में परिष्कृत होता रहा।

(स्रोत: Bharatkosh – सनातन धर्म)

✦ सनातन के दस मूल गुण – जो हर युग में प्रासंगिक हैं

Wikipedia के अनुसार सनातन धर्म में दस सामान्य कर्तव्य बताए गए हैं जो प्रत्येक मनुष्य के लिए हैं – जाति, वर्ण, लिंग या देश का भेद किए बिना:

१. सत्य – सदा सत्य बोलना और सत्य पर आचरण करना।

२. अहिंसा – किसी जीव को शरीर, मन या वाणी से हानि न पहुँचाना।

३. पवित्रता – शरीर, मन और वाणी की शुद्धता।

४. शुभभाव – सभी के प्रति मंगलकारी विचार रखना।

५. दया – सभी प्राणियों के प्रति करुणा।

६. धैर्य – विपरीत परिस्थितियों में भी स्थिर रहना।

७. सहनशीलता – क्षमा और सहिष्णुता।

८. इन्द्रिय-संयम – इच्छाओं और इन्द्रियों पर नियंत्रण।

९. दान – निःस्वार्थ भाव से देना।

१०. संयम – अनुशासित और नियमबद्ध जीवन।

(स्रोत: Wikipedia – सनातन धर्म Hindi)

🌿 सोचें: क्या ये दस गुण किसी एक धर्म के हैं? नहीं – ये मानवता के सार्वभौमिक मूल्य हैं। इसीलिए सनातन को 'मानवता का धर्म' कहा जाता है।

✦ सनातन धर्म की विशेषताएं – जो इसे अनोखा बनाती हैं

सनातन धर्म विश्व के अन्य धर्मों से इसलिए भिन्न है क्योंकि:

• यह एकेश्वरवादी है – एक ही परम-सत्ता को अनेक नामों और रूपों में पूजा जाता है। 'एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति' – सत्य एक है, ज्ञानी उसे अनेक नामों से जानते हैं।

• यह सर्वसमावेशी है – यहाँ सभी मार्ग स्वीकार्य हैं। ज्ञान-मार्ग, भक्ति-मार्ग, कर्म-मार्ग – सभी ईश्वर तक पहुँचने के मार्ग हैं।

• यह वैज्ञानिक है – इसमें प्रश्न पूछने की स्वतन्त्रता है। 'नेति नेति' – 'यह नहीं, यह नहीं' – सत्य की निरन्तर खोज ही इसकी पद्धति है।

• यह परिवर्तनशील है – राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुषों ने इसमें समय-समय पर आवश्यक सुधार किए। परन्तु मूल-तत्त्व सदा अखण्ड रहे।

(स्रोत: Wikipedia – सनातन धर्म; hiwiki.iiit.ac.in)

✦ चार पुरुषार्थ – जीवन के चार लक्ष्य

सनातन धर्म ने मनुष्य जीवन के चार लक्ष्य बताए हैं – जिन्हें 'चतुर्विध पुरुषार्थ' कहते हैं। ये हैं:

१. धर्म – अपने कर्तव्यों का पालन, नैतिक आचरण।

२. अर्थ – जीवन-निर्वाह के लिए सम्पत्ति और साधनों का अर्जन – किन्तु धर्म की सीमा में।

३. काम – जीवन की स्वाभाविक इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति – किन्तु नियमबद्ध रूप से।

४. मोक्ष – सभी बन्धनों से मुक्ति, परमात्मा से मिलन – यही जीवन का परम लक्ष्य।

🌿 आधुनिक जीवन में: आज का युवा केवल 'अर्थ' (धन) के पीछे भाग रहा है। इसीलिए तनाव है, अवसाद है, असन्तोष है। सनातन ने हजारों साल पहले ही बताया – जीवन केवल धन से नहीं, धर्म, काम, मोक्ष – इन चारों के सन्तुलन से पूर्ण होता है।

(स्रोत: alotusinthemud.com – Four Goals of Human Life)

✦ सनातन धर्म – विश्व को भारत का उपहार

सनातन धर्म ने विश्व को अनेक अनमोल उपहार दिए हैं – योग, ध्यान, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र, संगीत, नृत्य, वास्तुकला और दर्शन। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' – 'सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है' – यह विचार विश्व के किसी अन्य धर्म में इतनी स्पष्टता से नहीं मिलता।

'अहिंसा परमो धर्मः' – अहिंसा सर्वोच्च धर्म है – यह विचार महात्मा गाँधी के माध्यम से विश्व को मिला। डॉ. अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था – 'जब मैं हिंदू दर्शन पढ़ता हूँ तो लगता है कि विज्ञान ने जो सत्य खोजा है, वह सनातन ने हजारों साल पहले ही जान लिया था।'

सनातन धर्म कोई पंथ नहीं – यह मानवता की सबसे पुरानी, सबसे गहरी और सबसे व्यापक ज्ञान-परम्परा है।

अध्याय — 10 : हमें और बच्चों को सनातन क्यों जरूरी है?

– आज के युग में सनातन धर्म की अनिवार्यता –

✦ पहले – एक कड़वा सच

आज हमारे बच्चे सोशल मीडिया पर दिन के आठ-दस घण्टे बिता रहे हैं। वे पश्चिमी जीवनशैली को 'आधुनिकता' समझते हैं। अपनी भाषा, अपनी परम्परा, अपने त्योहार उन्हें पुराने लगते हैं। माता-पिता के पास उनसे बात करने का समय नहीं। मन्दिर जाने से वे शर्माते हैं।

यह स्थिति चिन्ताजनक है – परन्तु निराशाजनक नहीं। क्योंकि जब हम उन्हें सनातन का सत्य बताएंगे – तब वे स्वयं इसकी ओर लौटेंगे। और लौट रहे हैं। आज का युवा महाकुम्भ में जा रहा है, गीता पढ़ रहा है, योग कर रहा है। यह जागृति है।

(स्रोत: blog.dharmikvibes.com – Young India Returns to Its Roots, 2026)

🌿 शोध कहता है: भारत का युवा सनातन की ओर लौट रहा है – तनाव, अनिश्चितता और आधुनिकता की खोखलेपन से थककर। उसे केवल सही मार्गदर्शन चाहिए।

✦ कारण १ – पहचान का संकट

आज का बच्चा नहीं जानता कि वह कौन है, कहाँ से आया है, उसकी जड़ें कहाँ हैं। इस पहचान के अभाव में वह दिशाहीन हो जाता है – कभी पश्चिम की नकल करता है, कभी किसी विचारधारा का शिकार बन जाता है।

सनातन धर्म उसे पहचान देता है। जब वह जानेगा कि उसके पूर्वजों ने वेद लिखे, गणित की खोज की, योग दिया, विश्व का पहला विश्वविद्यालय (तक्षशिला) बनाया – तब उसे गर्व होगा। और गर्व से ही स्वाभिमान जन्मता है।

"जो अपनी जड़ों से कटा हुआ है, वह वृक्ष नहीं – टूटी हुई डाली है।"

✦ कारण २ – नैतिक मूल्यों का अभाव

आज के युग में 'सफलता' का अर्थ केवल धन और प्रसिद्धि हो गया है। बच्चों को कोई नहीं बताता कि झूठ बोलना क्यों गलत है, दूसरों को दुःख देना क्यों पाप है, माता-पिता का आदर क्यों करें।

सनातन धर्म में ये मूल्य न केवल सिखाए जाते हैं – बल्कि कहानियों, उदाहरणों और जीवन-प्रसंगों के माध्यम से हृदय में उतारे जाते हैं। राम की मर्यादा, कृष्ण की बुद्धि, हनुमान की निष्ठा, भीष्म का वचन-पालन – ये केवल कथाएं नहीं, जीवन के पाठ हैं।

(स्रोत: psbtrainingacademy.com – Sanatan Dharma in School Education, 2025)

✦ कारण ३ – मानसिक स्वास्थ्य का संकट

आज की सबसे बड़ी समस्या है – अवसाद (Depression), चिन्ता (Anxiety) और एकाकीपन (Loneliness)। किशोरावस्था में मानसिक रोग तेजी से बढ़ रहे हैं। बच्चे स्क्रीन पर घण्टों बिताते हैं – परन्तु भीतर से खाली हैं।

सनातन धर्म का योग, ध्यान, प्राणायाम – ये सब आज की भाषा में कहें तो 'Mental Health Tools' हैं। जब एक बच्चा रोज दस मिनट ध्यान करता है, गायत्री मन्त्र का पाठ करता है – उसका मस्तिष्क शान्त होता है, एकाग्रता बढ़ती है, तनाव कम होता है।

🌿 विज्ञान कहता है: Harvard Medical School के शोध के अनुसार – नियमित ध्यान (Meditation) से तनाव 40% तक कम होता है। और यह ध्यान हमारे ऋषियों ने हजारों साल पहले दिया था।

✦ कारण ४ – परिवार का टूटना

पश्चिमी जीवनशैली में परिवार टूट रहे हैं। वृद्धाश्रम भर रहे हैं। बच्चे माता-पिता को 'बोझ' समझने लगे हैं। यह हमारी संस्कृति नहीं है।

सनातन धर्म परिवार को सबसे पहली इकाई मानता है। 'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव' – माँ देवी है, पिता देव हैं, गुरु देव हैं। यह केवल श्लोक नहीं – यह जीवन जीने की पद्धति है।

जब बच्चा यह समझता है कि माँ-बाप का सम्मान करना उसका धर्म है – तब परिवार जुड़ा रहता है, समाज मजबूत रहता है।

✦ कारण ५ – सांस्कृतिक आक्रमण से रक्षा

आज एक सुनियोजित प्रयास हो रहा है – हिंदू त्योहारों को 'पर्यावरण-विरोधी' बताओ, सनातन परम्पराओं को 'अंधविश्वास' बताओ, हमारे देवी-देवताओं का उपहास करो। यह सांस्कृतिक आक्रमण है।

जो बच्चा अपनी परम्परा नहीं जानता – वह इस आक्रमण के सामने टिक नहीं सकता। परन्तु जो बच्चा जानता है कि होली के रंगों में आयुर्वेदिक गुण हैं, दीपावली में अलाव जलाने का वैज्ञानिक कारण है, सूर्य-नमस्कार एक सम्पूर्ण व्यायाम है – वह गर्व से उत्तर दे सकता है।

🌿 माता-पिता से निवेदन: अपने बच्चों को त्योहारों का अर्थ बताएं। मन्दिर ले जाएं – और वहाँ पहुँचकर बताएं कि यहाँ क्यों आए। परम्परा तब जीवित रहती है जब वह समझ से आती है, भय से नहीं।

✦ कारण ६ – जीवन का लक्ष्य

आज के युवा का सबसे बड़ा प्रश्न है – 'जी रहे हैं, पर किसलिए?' यह प्रश्न सनातन धर्म के पास उत्तर है – चतुर्विध पुरुषार्थ। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष – इन चारों को साधते हुए जीवन जीना।

जब बच्चे को पता होगा कि जीवन का लक्ष्य केवल IIT-IIM-Package नहीं है – बल्कि एक सात्विक, नैतिक, प्रेमपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीना है – तब वह दिशाहीनता से बचेगा।

"सनातन धर्म हमें बताता है – जीवन एक यात्रा है, लक्ष्य है मोक्ष – और इस यात्रा में प्रत्येक कदम धर्म से उठाओ।"

✦ घर में सनातन – व्यावहारिक सुझाव

सनातन को जीवन में उतारना कठिन नहीं है। छोटे-छोटे कदमों से शुरुआत करें:

१. प्रतिदिन प्रातः एक श्लोक या मन्त्र का पाठ – पाँच मिनट पर्याप्त हैं।

२. रात्रि भोजन से पहले परिवार मिलकर 'अन्नपूर्णे सदापूर्णे' का पाठ करें।

३. सप्ताह में एक बार बच्चे को रामायण या महाभारत की एक कहानी सुनाएं।

४. त्योहारों पर उनका अर्थ समझाएं – केवल रस्म न निभाएं।

५. बच्चे से पूछें – 'आज तुमने किसकी मदद की?' – यही सनातन की शिक्षा है।

६. दादा-दादी, नाना-नानी से बच्चों की भेंट कराएं – वे सनातन के जीवन्त ग्रन्थ हैं।

(प्रेरणा: zeenews.india.com – How to Introduce Sanatan Dharma to Kids, 2025)

✦ अन्तिम बात – एक पिता/माता का दायित्व

आप अपने बच्चे को अंग्रेजी सिखाते हैं। गणित सिखाते हैं। खेल सिखाते हैं। परन्तु यदि आप उसे अपनी जड़ें नहीं सिखाते – तो वह एक ऐसा पौधा है जो ऊपर से हरा-भरा दिखता है, परन्तु भीतर से खोखला है।

सनातन धर्म उसकी जड़ें हैं। उसे सिखाएं कि वह कौन है – एक गौरवशाली सनातनी, जिसके पूर्वजों ने दुनिया को ज्ञान दिया, जिसकी परम्परा में वीर बंदा बैरागी जैसे योद्धा थे, जिसके ग्रन्थों में रामायण और महाभारत जैसे जीवन-दर्पण हैं।

सनातन केवल धर्म नहीं – यह हमारी पहचान है, हमारी विरासत है, हमारा गौरव है।

"आओ लौट चलें – सनातन की ओर। न डर से, न दबाव से – बल्कि गर्व से, प्रेम से और समझ से।" – नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क'

🕉 *जय सनातन! राधे-राधे!* 🙏 🕉

– नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क'

सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी | सनातन वैष्णव इतिहासकार | www.nareshswaminimbark.in

❋ हमारा उद्देश्य ❋

सनातन धर्म, संस्कृति, शिक्षा और राष्ट्रीय चरित्र
के द्वारा व्यक्तियों और समाज के कल्याण हेतु
जागरण करना।

❋ हमारा संकल्प ❋

आओ लौट चलें सनातन की ओर, नया सवेरा
नई दिशा, नई ऊर्जा के साथ राष्ट्र सेवा करें!

मुख्य विषय

- सनातन विचार धारा
- धर्म, संस्कृति एवं अध्यात्म
- राष्ट्र सेवा एवं समाज सेवा
- शिक्षा, ज्ञान एवं संस्कार
- युवा जागरण एवं प्रेरणा
- भारतीय इतिहास एवं गौरव
- पर्यावरण एवं गौ सेवा



संस्थापक संपादक
नरेश दास वैष्णव
'निम्बार्क'

> "सनातन के पथ पर चलें, ज्ञान, सेवा और धर्म की
> ज्योति से जग को आलोकित करें,
> यही है नया सवेरा का संकल्प।"



पत्रिका के बारे में

सनातन भारत : नया सवेरा एक मासिक ई-पत्रिका है जो सनातन धर्म, संस्कृति, शिक्षा, राष्ट्र सेवा और सामाजिक कल्याण के लिए समर्पित है। हमारा लक्ष्य है हर व्यक्ति को प्रेरित कर एक सशक्त, संस्कारी और आत्मनिर्भर समाज का निर्माण करना।

ई-पत्रिका
(केवल ऑनलाइन)

हमारी वेबसाइट पर जाएँ
www.nareshswaminimbark.in